विषय–सामाजिक विज्ञान

इकाई 1–भारत और समकालीन विश्व –1 (इतिहास)

अध्याय 3– भारत में राष्ट्रवाद–कक्षा 10

प्रस्तुतकर्त्ता–गोबिन्द बल्लभ भटट

स0अ0,एल0टी0

रा0इ0का0 झूलाघाट,पिथौरागढ।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान भारत में घटी कुछ प्रमुख घटनाएं–

1– **जालियांवाला हत्याकांड**–बिट्रिश शासन की भारतीयों के प्रति अत्याचार पूर्ण नीतियों के चलते एंव रौलेट एक्ट के विरूद्व भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा पंजाब के अमृतसर जिले के **जलियांवाला बाग** नामक स्थान 13 अप्रैल 1919 ई0 को एक शान्तिपूर्ण विरोध प्रदर्शन हेतु एक सभा का आयोजन किया गया उस दिन अमृतसर में बहुत सारे गॉव वाले एक मेले में शिरकत करने के लिए जलियॉवाला बाग मैदान में जमा हुए थे । सभा में बड़ी संख्या में स्त्री–पुरूष एकत्र हुए थे ,सभा बड़ी शान्तिपूर्ण डंग से चल रही थी कि अचानक जनरल डायर ने आकर सारे बाग को अपने सैनिकों से घिरवा दिया और निहत्थी जनता पर गोली चलाने का आदेश दे दिया ,सरकारी गणना के अनुसार इस हत्याकांड में सैकड़ो व्यक्ति मारे गये,इस घटना के कारण सम्पूर्ण देश में अंगेजी शासन के विरूद्व जनता का सघर्ष और गति पकड़ने लगा। जैसे –जैसे जलियॉवाला बाग की खबर फैली उत्तर भारत के बहुत सारे शहरों में लोग सड़कों पर उतरने लगे। हड़तालें होने लगी ,लोग पुलिस से मार्चा लेने लगे। सरकार ने निर्ममता से इस आन्दोलन को कुचलने का रास्ता अपनाया।

जलियांवाला बाग हत्याकांड को कलाकार ने इस तरह चित्रित किया गया।

This image is taken google .com

2–**रौलेट एक्ट**– भारतीय स्वत्रन्त्रता आन्दोलन का दमन करने के उद्देश्य से बिट्रिश सरकार द्वारा न्यायाधीश **सिडनी रौलेट की अध्यक्षता** में एक समिति नियुक्त की जिसकी सिफारिश के आधार पर **21 मार्च 1919** को रौलेट एक्ट लागू किया गया । इस एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को मात्र सन्देह के आधार पर ही गिरफतार किया जा सकता था अथवा गुप्त मुकदमा चलाकर उसे दण्डित किया जा सकता था ।इस कानून के जरिये सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को दो साल तक मुकदमा चलाये जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया। भारतीयों ने **काला कानून** कहकर इस एक्ट का विरोध किया । महात्मा गॉधी ऐसे अन्यायपूर्ण कानून के खिलाफ अहिंसक ढंग से नागरिक अवज्ञा चाहते थे, देश भर में महात्मा गॉधी के नेत्त्व में विरोध प्रदर्शन किये गये ।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

This image is taken google .com

3–**असहयोग आन्दोलन**–1920 में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा देश भर में असहयोग आन्दोलन चलाया गया । अपनी प्रसिद्व पुस्तक **हिन्द स्वराज्य में महात्मा गॉधी** ने कहा था कि भारत में बिट्रिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ था और यह शासन इसी सहयोग के कारण चल पा रहा है। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर बिट्रिश शासन ढह जायेगा और स्वराज की स्थापना हो जायेगी।

4–असहयोग आन्दोलन के कारण–

1– **रौलेट एक्ट** –1919 में बिट्रिश सरकार द्वारा न्यायाधीश सिडनी रौलेट की समिति कही सिफारिसों के आधार पर रौलेट एक्ट लागू किया गया । इस एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को मात्र सन्देह के आधार पर ही गिरफतार किया जा सकता था अथवा गुप्त मुकदमा चलाकर उसे दण्डित किया जा सकता था । भारतीयों ने काला कानून कहकर इस एक्ट का विरोध किया ।

2– **जलियांवाला बाग नरसंहार**–1919 के जलियांवाला बाग नरसंहार के कारण देश भर में बिट्रिश शासन के विरूद्व असन्तोष व्याप्त था।

3–**पंजाब में मार्शल ला लागू किया जाना**–जलियावांला बाग नरसंहार के दोषियों को दण्डित करने के स्थान पर सरकार द्वारा पंजाब में मार्शल ला लागू किया गया जिससे असहयोग आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

4–**हण्टर कमेटी की जांच –** हंटर कमेटी द्वारा प्रस्तुत जांच रिर्पोट से असन्तोष और ब्याप्त हो गया।

5–**खिलाफत आन्दोलन**–टर्की में खिलाफत के प्रश्न को लेकर देश के मुसलवान भी अंगेजों के विरूद्व थे महात्मागॉधी ने अली बन्धुओं के सामने असहयोग आन्दोलन कार्यक्रम रखा तो उन्होंने भी असहयोग आन्दोलन को समर्थन दे दिया।

5–असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम–

1– विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना तथा स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना ।

2– सरकार द्वारा दी गयी पदवियों को वापस करना तथा अवैतनिक पदों का त्यागकरना।

3–सरकारी नौकरियें ,सेना,पुलिस,अदालतों विधायी परिषदों ,स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना।

4– अगर सरकार दमन का रास्ता अपनाती है तो व्यापक सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करना।

5–अपनी स्वदेशी शिक्षण संस्थाएं खोलना।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

6–असहयोग आन्दोलन को वापस लेना– असहयोग आन्दोलन के दौरान 4 फरवरी 1922 को उत्तर–प्रदेश के निकट गोरखपुर के चौरा–चोरी नामक स्थान पर एक पुलिस थाने को आन्दोलनकारियों ने आग के हवाले कर दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी जिन्दा जलकर मर गये थे ,जिस कारण गॉधी जी ने आन्दोलन में हिंसा होने के कारण असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया ।

7– **चौरी–चौरा की घटना**–महात्मा गॉधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा बिट्रिश शासन की नीतियों के विरूद्व अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन चलाया जा रहा था इसी दौरान 4 फरवरी 1922 को उत्तर–प्रदेश के निकट गोरखपुर में आन्दोलनकारियों ने एक पुलिस थाने को आग के हवाले कर दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी जिन्दा जलकर मर गये थे ,जिस कारण गॉधी जी ने आन्दोलन में हिंसा होने के कारण असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया ।

चौरा–चोरी स्थल ,गोरखपुर,उत्तर–प्रदेश
This image is taken by google .com

8–सत्याग्रह –महात्मा गॉधी जनवरी 1915 ई0 में दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटे उन्होंने एक नये तरह के जनांदोलन के रास्ते पर चलते हुए वहॉ की नस्लभेदी सरकार से सफलतापूर्वक लोहा लिया था । इस पद्वति को वो सत्याग्रह कहते थे सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता था।
इसका अर्थ यह था कि अगर आपका उददेश्य सच्चा है ,यदि आपका संघर्ष अन्याय के विरूद्व है तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है ।प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा द्वारा अपने संघर्ष में सफल हो सकता है ।इसके लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झकझोरना चाहिए। उत्पीड़क शत्रु को ही नहीं बल्कि सभी लोगों को हिंसा के जरिये सत्य को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए । इस संघर्ष में अन्ततः सत्य की जीत होती है ।
सत्याग्रह आन्दोलन को उन्होंने बिहार के चम्पारन में 1916 ई0 में अैर गुजरात के खेड़ा में 1917 ई0 में चलाया। 1928 ई0में गुजरात के बारदोली में सरदार पटेल द्वारा सफलापूर्वक सत्याग्रह आन्दोलन चलाया।

9–**साइमन कमीशन**–भारत में बिट्रिश शासन की नीतियों के विरोध में साधारण जनता ,मजदूर, किसान युवा आन्दोलित थे । जगह–जगह विरोध प्रदर्शन हो रहे थे ,क्रान्तिकारी आन्दोलन भी गति पकड़ रहा था ,इन सब को देखते हुए बिट्रेन की टोरी सरकार द्वारा सन 1927 ई0 में सर जान साइमन के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया , इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

कार्यशैली का अध्ययन करना था और सुझाव देने थे ,इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था। सारे सदस्य अंगेज थे जिसका भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा विरोध किया गया ।1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तो उसका स्वागत **साइमन कमीशन गो बैक** के नारों से किया गया। लाहौर में लाला लाजपत राय ने कमीशन का घोर विरोध किया उनके नेतृत्व में लाहौर में एक विशाल जलूस निकाला गया पुलिस से निर्ममतापूर्वक दमन किया। लाला लाजपत राय पर लाठियां बरसायी गयी जिनके प्रहार से उनको गम्भीर चोटें आयी जिस कारण उनकी शीघ्र मृत्यु हो गयी ।

साइमन कमीशन ने अपने प्रतिवेदन में प्रान्तों में उत्तरदयी सरकार की स्थापना,द्वैध शासन की समाप्ति, संघीय शासन की स्थापना , केन्द्रीय व्यवस्थापिका का पुनर्गठन ,मताधिकार का विस्तार जैसी महत्वपूर्ण अनुशंसाएं की गयी थी यह प्रतिवेदन अब तक के सुधारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। 1935ई0 का सुधार आन्दोलन प्रमुखतः साइमन कमीशन की संस्तुतियों पर ही आधारित था।

साइमन कमीशन का विरोध ,साइमन गो बैक के नारों से किया गया

This image is taken by google .com

10–26 जनवरी 1930 का महत्व ,पूर्ण स्वराज्य की मॉग–1929ई0 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांगेस के लाहौर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांगेस ने अपना लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य की मॉग को औपचारिक रूप से मान लिया और तय किया गया कि 26 जनवरी 1930 को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा और उस दिन लोग पूर्ण स्वराज्य के लिए संघर्ष की शपथ लेंगें ।(इसी के तहत 1930 से प्रतिवर्ष स्वतन्त्रता प्राप्ति तक भारतीय **राष्ट्रीय कांगेस 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाती आयी लेकिन जब 15 अगस्त 1947 को देश** स्वतन्त्र हुआ तो स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त को मनाया जाने लगा लेकिन 26 जनवरी की तिथि का देशवासियों के लिए विशेष महत्व था इसी लिए जब देश के लिए नये संविधान लागू करने का मौका आया तो इसे 26 जनवरी की तिथि से लागू किया गया और 26 जनवरी 1950 से प्रतिवर्ष इस तिथि को गणत्रन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।)

11–गॉधी जी की डाण्डी यात्रा– देश को एकजुट करने के लिए महात्मा गॉधी को नमक एक शक्तिशाली प्रतीक दिखायी दिया 31 जनवरी 1930 को उन्होंने वाइसराय इरविन को एक पत्र लिखा जिसमें एक मॉग यह भी थी कि नमक पर कर को खत्म किया जाय। उनका मानना था कि नमक प्राकृतिक रूपसे मिलता है जो सभी के भोजन का अभिन्न हिस्सा था इसीलिए नमक पर कर और उसके उत्पादन पर सरकार द्वारा नियन्त्रण को उन्होंने अस्वीकार कर
दिया लेकिन लार्ड इरविन ने जब ये बात नहीं मानी तो महात्मा गॉधी ने अपने विश्वस्त 78 वालिंटियरों के साथ 12 मार्च 1930 को नमक यात्रा शुरू कर दी जो गुजरात के उनके साबरमती आश्रम से 240 किमी दूर डांडी नामक गुजरात के तटीय कस्बे में खत्म होनी थी ,24 दिन की इस यात्रा में जगह–जगह हजारों की संख्या में लोगों ने इस यात्रा का स्वागत किया अंततः 6 अप्रैल को

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

आत्मशुद्वि के बाद गॉधीजी ने समुद्र के पानी से अपने हाथों से नमक बनाकर अगेजों के नमक कानून को भंग कर दिया । यहीं से सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरूआत हुई।
डा0 विपिन चन्द्र ने लिखा है –यह कार्यवाही भारतीय जनता द्वारा अंग्रेजों द्वारा बनाये गये कानूनों के तहत रहने और इस प्रकार बिट्रिश शासन के अधीन रहने से इन्कार का प्रतीक थी।

नमक बनाकर नमक कानून को भंग करते हुए महात्मा गॉधी
This image is taken by google .com

महात्मा गॉधी और श्रीमती सरोजनी नायडू ,नमक सत्याग्रह के मार्च में
This image is taken by google .com

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान महातमा गॉधी और कांग्रेस के कार्यकर्त्ता

This image is taken by google .com

12–सविनय अवज्ञा आन्दोलन– इसका तात्पर्य है कि भारतीय जनता द्वारा विनय पूर्वक बिट्रिश सरकार द्वारा बनाये गये कानूनों का न मानना या अवज्ञा करना। महात्मा गॉधी द्वारा 1930 ई0 में नमक पर बिट्रिश शासन द्वारा लगाये जाने वाले कर के विरोध में इस आन्दोलन की शुरूआत की।

13–सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कारण–

1– **साइमन कमीशन का विरोध**– साइमन कमीशन जब 1928 में भारत आया तो उसमें एक भी भारतीय का नाम न होने के कारण उसका देश भर में विरोध किया गया,

2–**आर्थिक मन्दी के कारण असन्तोष**–विश्वब्यापी आर्थिक मन्दी का असर भारत पर भी पड़ा। 1926 के बाद कृषि उत्पादों की कीमतें गिरने लगी और 1930 के बाद आर्थव्यवस्थाा पूरी तरह धरासायी हो गयी जिससे भारतीय सरकार से असन्तुष्ट हो गये।

3– **नेहरू रिर्पोट की अस्वीकृति**–1928 ई0 में मोतीलाल नेहरू और अन्य कांग्रेसी नेताओं ने एक दस्तावेज तैयार किया गया लेकिन बिट्रिश शासन द्वारा नेहरू रिर्पोट को अस्वीकार कर दिया जिससे भारत में संवैधानिक तथा उत्तरदायी शासन की मॉग समाप्त होती सी दिखायी देने लगी।

4– **स्वतन्त्रता की मॉग की अस्वीकृति–** 1929 के जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांगेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की मॉग की गयी लेकिन सरकार ने इसे ठुकरा दिया था।

5–**नमक आन्दोलन**–ऐसे में महात्मा गॉधी के पास दूसरा रास्ता नहीं था इस तरह कांगेस ने देश भर में बिट्रिश शासन के विरूद्व सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ दिया , 12 मार्च 1930 को नमक यात्रा शुरू कर दी जो गुजरात के उनके साबरमती आश्रम से 240 किमी दूर डांडी नामक गुजरात के तटीय कस्बे में खत्म होनी थी ,24 दिन की इस यात्रा में जगह–जगह हजारों की संख्या में लोगों ने इस यात्रा का स्वागत किया अंततः 6 अप्रैल को आत्मशुद्वि के बाद गॉधीजी ने समुद्र के पानी से अपने हाथों से नमक बनाकर ,अगेजों के नमक कानून को भंग कर दिया । यहीं से सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरूआत हुई।

गॉधी जी ने नमक आन्दोलन के जरिये अंगेजी सरकार के कानूनों का विरोध किया,जगह –जगह सरकार का कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं द्वारा विनय पूर्वक अंग्रेजी सरकार का विरोध किया 1930 से

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

लेकर 1934 तक यह आन्दोलन चला कालान्तर में यह उग्र हो गया जिस कारण महात्मा गॉधी ने यह आन्दोलन वापस ले लिया।

14–सविनय अवज्ञा आन्दोलन के परिणाम–सविनय अवज्ञा आन्दोलन के निम्नलिखित परिणाम आये–

1–इस आन्दोलन के जरिये भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का जागरण किया।
2–इस आन्दोलन से ही बिट्रिश सरकार का ध्यान भारत में संवैधानिक सुधारों की ओर गया।
3–सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने ही भारत में 1935 के भारत शासन अधिनियम की नींव डाली।
4–इस आन्दोलन के प्रभाव से घबराकर बिट्रिश सरकार द्वारा भारत में साम्प्रदायिकता को बढाने का कार्य किया।

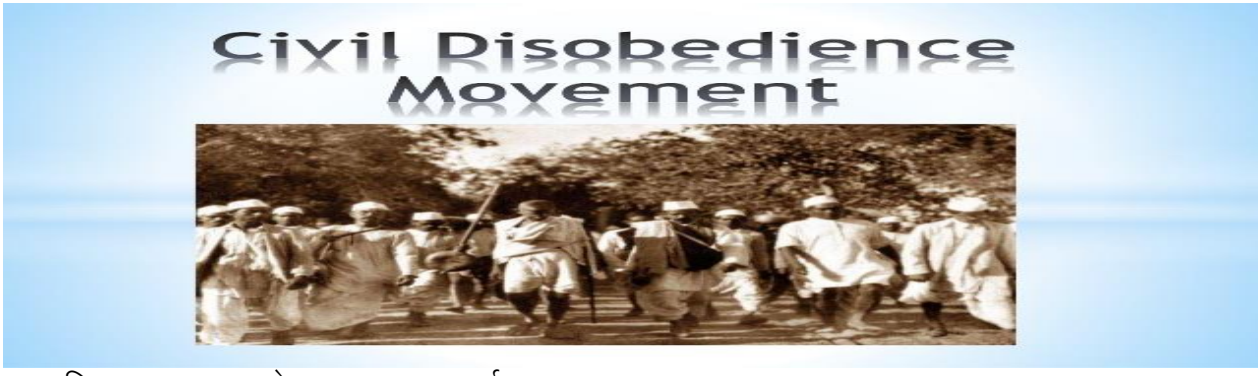

सविनय अवज्ञा आन्दोलन का एक प्रदर्शन
This image is taken by google .com

15–गॉधी –इरविन समझौता–

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान 5 मार्च 1931 को महात्मा गॉधी और भारत के तत्कालीन वाइसराय लार्ड इरविन के बीच समझौते के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित थे।

1–सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित कर दिया जायेगा।
2–सरकार अध्यादेशों और मुकदमों को वापस ले लेगी।
3–हिंसात्मक अपराधियों को छोड़कर समस्त अन्य समस्त राजनीतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया जायेगा।
4–समुद्र तट से निश्चित दूरी पर नमक बनाने की छूट होगी।
5–शराब ,अफीम व विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना देने वालों को गिरफतार नहीं किया जायेगा।
6–कांगेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी।
7–जिन व्यक्तियों ने सरकारी नौकरियां छोड़ दी है उन्हें वापस लेने में उदार नीति अपनायी जानी चाहिए।
8–विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग नहीं किया जायेगा।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

गोलमज सम्मेलन 1931 ई0

This image is taken by google.com

16–पूना समझौता– डा0 बी0आर अम्बेडकर ने 1930 ई0 में दलितों को दमित वर्ग एसोसिएशन में संगठित किया। दलितों के अलग निर्वाचन क्षेत्रों के सवाल पर दूसरे गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गॉधी के साथ उनका काफी विवाद रहा। जब बिट्रिश सरकार ने अम्बेडकर की बात मान ली जो गॉधीजी आमरण अनशन पर बैठ गये । उनका मत था कि दलितों के लिए अलग निर्वाचन द्वोत्रों की व्यवस्था से समाज में उनके एकीकरण की प्रकिया धीमी पड़ जायेगी । आखिरकार डा0 अम्बेडकर ने गांधीजी की बात मान ली और सितम्बर 1932 ई0 में पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर कर दिए इससे दमित वर्गों को प्रान्तीय एवं केन्द्रीय विधायी परिषदों में आरक्षित सीटें मिल गयी ।

17–संस्कृति एवं राष्ट्रवाद– राष्ट्रवाद का विचार चित्रों ,गीतों के माध्यम से लोगों तक पहुॅचा किसी भी राष्ट्र की पहचान सबसे ज्यादा किसी तस्वीर में अंकित की जाती हैं इससे लोंगों को एक ऐसी छवि गढ़ने में मदद मिलती है जिसके जरिये वे राष्ट्र को पहचान सकें बीसवीं सदी में राष्ट्रवाद के विकास के साथ भारत की पहचान भारत माता की छवि का रूप लेने लगी यह तस्वीर सबसे पहले बंकिमचन्द्र चटर्जी ने बनाई 1870 के दशक में उन्होंने मातृभूमि की स्तुति के रूप में वन्दे मातरम गीत लिखा बाद में उन्होंने इसे अपने उपन्यास आनन्दमठ में शामिल कर लिया ।

भारत माता की विख्यात छवि को चित्रित किया अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने ।रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लोक गाथा गीत,बाल गीत और मिथकों को इकठठा कर लोक परम्पराओं को पुनर्जीवित करने के आन्दोलन का नेतृत्व किया।

18–प्रथम विश्व युद्व और भारतीय राष्टीय आन्दोलन– प्रथम विश्व युद्व ने भारत के राष्टीय आन्दोलन को बल प्रदान किया । इस समय भारत में बढ़ते मूल्यों ने जनसामान्य के समक्ष कठिन स्थितियां उत्पन्न कर दी थी । ग्रामीणों को सेना में भर्ती हाने के लिए बाध्य किया गया ,उनसे बेगार करवाई गयी, युद्व से लौटे भारतीय सैनिकों में भी बिट्रिश शासन के विरूद्व असन्तोष व्याप्त था । इन कारणें से भारतीय जनता में बिट्रिश शासन के विरूद्व व्यापक असन्तोष उत्पन्न हुआ और भारत में राष्टीय भावनाएं जाग्रत हुई।

19–पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर–

प्रश्न 1–जलियांवाला बाग हत्याकांड कब और कहॉ हुआ था ?
उत्तर–पंजाब के अमृतसर जिले में 13 अप्रैल सन 1919 ई0 में ।
प्रश्न 2– रौलट एक्ट कब पारित हुआ था ?
उत्तर– 1919 ई0 में।

कक्षा 10′
विषय–सामाजिक विज्ञान
इकाई 1–भारत और समकालीन विश्व–1 (इतिहास)
अध्याय संख्या–3 ,भारत में राष्ट्रवाद

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

प्रश्न 3– असहयोग आन्दोलन कब प्रारम्भ हुआ ?
उत्तर– महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन 1920 ई0 में प्रारम्भ किया गया।
प्रश्न4–असहयोग आन्दोलन कब वापस लिया गया ?
उत्तर– 1922 ई0 में जब उत्तर–प्रदेश के चौरी–चौरा कांड जिसमें भीड़ द्वारा एक पुलिस थाने को आग लाग दी ।
प्रश्न 5–साइमन कमीशन की नियुक्ति कब हुई और सह भारत किस वर्ष आया था ?
उत्तर–साइमन कमीशन की नियुक्ति 1927 ई0 में हुई और यह 1928 ई0 में भारत आया था।
प्रश्न 6– महात्मा गांधी द्वारा डांडी मार्च कब आरम्भ किया गया ?
उत्तर–12 मार्च 1930 ई0 को आरम्भ किया गया इसी के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ हो गया।
प्रश्न–7–महात्मा गॉधी और लार्ड इरविन के बीच समझौता कब हुआ ?
उत्तर– 5 मार्च 1931 ई0 में।
प्रश्न–8–पूना समझौता कब और किसके बीच हुआ ?
उत्तर–पूना समझौता 1932 ई0 में दलितों को पृथक निर्वाचक सीटों के मसले पर महात्मा गांधी और भीमराम अम्बेडकर के बीच हुआ।
प्रश्न–9–भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वराज्य का नारा कब दिया गया ?
उत्तर– 31 दिसम्बर 1929 ई0 के लाहौर अधिवेशन में।
प्रश्न 10–वन्देमातरम गीत किसने लिखा तथा यह कहॉ से लिया गया ?
उत्तर–वन्देमातरम गीत के रचयिता बंकिम चन्द्र चटटोपाध्याय थे जो उनके उपन्यास आनन्दमठ से लिया गया।
प्रश्न 11–भगत सिंह को फॉसी कब दी गयी ?
उत्तर–23 मार्च 1931 ई0 को ।
प्रश्न–12–चम्पारन सत्याग्रह कब और कहॉ हुआ ?
उत्तर– चम्पारन सत्याग्रह 1916 ई0 में बिहार के चम्पारन में आरम्भ हुआ ।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।

सन्दर्भ पुस्तकें–

1–NCERT Book class-10th

2–SCERT Book class-10th (उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा परिषद की कक्षा 10 की पुस्तक)

3- दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन की पुस्तक आधुनिक भारत का इतिहास।(हिन्दी माध्यम कार्यानवय निदेशालय, दिल्ली)

4–चित्रा प्रकाशन(इंडिया) प्रा0लि0 मेरठ की पुस्तक ।

5–आधुनिक भारत –प्रतापसिंह लिखित

6–उपकार प्रकाशन का ,भारत का इतिहास।

7–उपकार प्रकाशन,प्रतियोगिता दर्पण एवं समसामयिकि।

8–Google & Wikipedia

9––सभी चित्र Google.comसे लिये गये हैं।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट
,पिथौरागढ।